भारतीय विदेश नीति: संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) के शासन के संदर्भ में (2004-14)

***सोहन लाल जाट**
****प्रो. मनोज अवस्थी**

सारांश

स्वतंत्रता से लेकर आज तक भारतीय विदेश नीति में अनेक परिवर्तन दृष्टिगत हुए। 1990 का दशक अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तनों का दशक रहा जिसने भारतीय विदेश नीति को गहरे रूप में प्रभावित किया। इसकी शुरुआत सोवियत संघ के विघटन और अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था के द्वि-ध्रुवीय से एक-ध्रुवीय में परिवर्तन के साथ हुई। इन परिवर्तनों के फलस्वरुप भारत को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में तेजी से परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी विदेश नीति के केंद्र को फिर से संगठित और पुनर्भाषित करना पड़ा। यूपीए शासनकाल के दौरान भी भारतीय विदेश नीति में निरंतरता कायम रही और भारत ने अमेरिका, रूस, चीन और पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने का प्रयास किया ताकि भारत एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभर सके। प्रस्तुत शोध-पत्र यूपीए शासनकाल के दौरान भारतीय विदेश नीति का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए प्रमुख देशों के साथ भारत के संबंधों की व्याख्या करने का प्रयास करता है। यह शोध-पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

कुंजी शब्द: विदेश नीति, यूपीए, वैश्विक शक्तियां, विदेशमंत्री, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति।

*शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, (राज.)
**प्रोफेसर, एसपीसी राजकीय महाविद्यालय, अजमेर (राज.)

I. विदेश नीति: अर्थ एवं परिभाषा

किसी भी देश की विदेश नीति प्रमुखतया कुछ सिद्धांतों, हितों एवं उद्देश्यों पर आधारित होती है जिसके द्वारा एक देश दूसरे देश के साथ अपने राजनीतिक संबंधों का संचालन करता है। इसी विदेश नीति के माध्यम से एक राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दूसरे देशों के साथ अपने संबंधों का निरूपण करता है। वस्तुतः सभी देशों की विदेश नीति उनके राष्ट्रीय हितों पर आधारित होती है और विदेश नीति में राष्ट्रीय हित ही सर्वोपरि होता है। प्रो. मॉडलस्की के शब्दों में, "विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन क्रियाओं की व्यवस्था है जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के व्यवहार को बदलने तथा अपनी गतिविधियों को अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में ढालने की कोशिश करता है"। विदेश नीति के संदर्भ में फेलिक्स ग्रास कहते हैं कि "कई बार किसी राष्ट्र के साथ संबंध न होना या उसके बारे में कोई निश्चित नीति न होना भी विदेश नीति के अंतर्गत आता है"। इस प्रकार किसी राष्ट्र की विदेश नीति के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू होते हैं। यह सकारात्मक तब होती है, जब वह दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को बदलने का प्रयास करती है तथा नकारात्मक तब कही जाती है, जब वह दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को परिवर्तित करने की कोशिश नहीं करती है। इस प्रकार किसी देश की विदेश नीति सामान्यतः उन सिद्धांतों का समुच्चय होती है जो उसके राष्ट्रीय हितों पर आधारित होती है।

II. भारतीय विदेश नीति: एक परिचय

भारत की विदेश नीति भी अनेक सिद्धांतों और उद्देश्यों पर आधारित है जो इसकी राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करने में सहायक है। भारत की विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना, साम्राज्यवाद का विरोध करना, रंगभेद नीति के खिलाफ खड़ा होना, अंतरराष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान का प्रयास करना, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देना, गुटनिरपेक्ष और गैर-प्रतिबद्ध रहना है

और तीसरी दुनिया की एकता और एकजुटता बनाए रखना है। भारत की विदेश नीति के महत्वपूर्ण सिद्धांतों में राष्ट्रीय हितों का संरक्षण, विश्व शांति की उपलब्धि, निरस्त्रीकरण, अफ्रीकी-एशियाई राष्ट्रों की एकता शामिल है। इन उद्देश्यों को कुछ मार्गदर्शक सिद्धांतों जैसे पंचशील, नाम, सार्क और अन्य के माध्यम से प्राप्त करने की कोशिश की जाती है।

III. संप्रग शासन के दौरान भारत की विदेश नीति (2004-14):

भारतीय संसद के 14 वीं लोकसभा चुनावों (2004) में वाजपेयी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की पराजय हुई और कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) ने अप्रत्याशित जीत दर्ज की। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने पद लेना स्वीकार नहीं किया। विख्यात अर्थशास्त्री और भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर डॉ. मनमोहन सिंह जिन्होंने नरसिंह राव सरकार में वित्त मंत्री का पद संभाला था, को सरकार का नेतृत्व करने के लिए चुना गया। वामपंथियों ने सरकार में शामिल हुए बिना इसका बाहर से समर्थन किया। डॉ. मनमोहन सिंह की अध्यक्षता में 68 सदस्यीय सरकार में कुंवर नटवर सिंह ने विदेश मंत्री का पदभार ग्रहण किया तथा भारतीय विदेश नीति के चिर-परिचित मूल सिद्धांतों यथा- गुटनिरपेक्षता, पंचशील, सार्क देशों के साथ सहयोगी और मित्रतापूर्ण संबंध, विकासशील देशों के साथ सहयोग में वृद्धि, रूस तथा चीन के साथ संबंधों को महत्त्व देना, संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ मित्रतापूर्ण संबंधों को बनाए रखना, यूएनओ का समर्थन, सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की मांग और इसकी प्राप्ति के प्रयास करना, विश्व व्यापार संगठन में विकासशील देशों के हितों की रक्षा करना, परमाणु शास्त्रों के साथ भारत की परमाणु नीति की स्वायत्ता को कायम रखना, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समाप्ति के लिए विभिन्न देशों के साथ सहयोग करना आदि शामिल है।

भारत की विदेश नीति पांच सिद्धांतों से परिभाषित हुई है। पहला, दुनिया से भारत के रिश्ते देश की विकास संबंधी प्राथमिकताओं से तय हुए हैं जिसका मकसद है; देश की भलाई के अनुकूल वैश्विक वातावरण बनाना। बाकी चार पहलू हैं- विश्व अर्थव्यवस्था के साथ अधिक एकीकरण, सभी बड़ी ताकतों के साथ संबंधों में अधिक स्थिरता, भारतीय उपमहाद्वीप में अधिक क्षेत्रीय सहयोग एवं संपर्क और पांचवां यह कि विदेश नीति सिर्फ स्वार्थ से तय नहीं होती बल्कि यह भारतीय जनमानस के उसूलों पर आधारित है। पांचवें बिंदु की व्याख्या करते हुए डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि "बहुलवादी, धर्मनिरपेक्ष, उदार लोकतंत्र के ढांचे में आर्थिक विकास की तलाश के भारत के प्रयोग ने दुनिया भर में लोगों को प्रेरित किया है"। अर्थात अपनी विदेश नीति को उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम से उपजे मूल्यों की परंपरा से संचालित बताया।

संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार और इसके सहयोगी दलों ने भारतीय प्रशासन और नीतियों को संचालित करने के लिए एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम अपनाया जिसमें भारतीय विदेश नीति के अनेक सिद्धांतों और नीतियों को शामिल किया गया। अपनी सरकार की विभिन्न घोषणाओं और वक्तव्यों के माध्यम से प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और विदेश मंत्री नटवर सिंह ने इसकी विशेषताओं को स्पष्ट किया है जो निम्न प्रकार है:-

- पूर्व एनडीए सरकार के दौरान अमेरिका के पक्ष में विदेश नीति का झुकाव अधिक था जिसे संतुलित करने का प्रयास करना।
- विश्व राजनीति में बहु-ध्रुवीयता को प्रोत्साहित करना तथा एकमात्र विश्व शक्ति (अमेरिका) द्वारा अपनी इच्छा और हितों के अनुसार विश्व राजनीति के संचालन करने से रोकने की कोशिश करना।

- भारतीय विदेश नीति की स्वतंत्रता को विश्वसनीय और अधिक प्रभावी बनाना ताकि सभी वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर स्वतंत्रतापूर्वक निर्णय लिए जा सकें।
- फिलिस्तीन के लोगों को अपना राज्य प्राप्त करने के प्रयासों का पूर्ण समर्थन करना।
- सार्क देशों के साथ निकटता के संबंध स्थापित करने का प्रयास करना ताकि क्षेत्रीय शांति कायम हो सके।
- रूस और चीन के साथ संबंधों अधिक विकास करना ताकि राष्ट्रीय हितों की पूर्ति की जा सके।
- अमरीका के साथ संबंधों को विकसित करने के प्रयास करना।
- विश्व व्यापार मंच पर तीसरी दुनियां के देशों के विरुद्ध किए जाने वाले समझौतों और संधियों का दृढ़ता से विरोध करना और सभी विकासशील देशों के साथ इस संदर्भ में तालमेल स्थापित करना।

इस प्रकार यूपीए के शासनकाल के दौरान पूर्ववर्ती सरकारों की विदेश नीतियों को भी निरंतरता प्रदान की गई। साथ ही, यह भी दोहराया गया कि आर्थिक सुधार जारी रहेंगे और विदेशी पूँजी निवेश को प्रोत्साहित किया जायेगा। इसके साथ ही, यह भी कहा गया कि यूपीए सरकार भारतीय विदेश नीति की स्वतंत्रता को बनाए रखेगी।

IV. यूपीए शासन के दौरान प्रमुख देशों के साथ भारत के संबंध:

i. **पाकिस्तान के साथ संबंध:** यूपीए सरकार ने अपने पड़ौसी देशों के साथ संबंधों के विकास की नीति को निरंतर प्राथमिकता प्रदान की और यह प्रयास किया कि पाकिस्तान के साथ भी अच्छे संबंध बने रहें। परन्तु मई 2004 से 2014 के दौरान पाकिस्तान की आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता के कारण भारत- पाक संबंधों का विकास सीमित रूप में ही हो पाया। इसी संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र महासभा में भाग लेने

गए भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 24 सितंबर 2004 को न्यूयॉर्क में पाकिस्तान के जनरल मुशर्रफ के साथ विस्तार से रचनात्मक और स्पष्ट बातचीत की। दोनों नेताओं ने अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान के रास्ते ईराक से गैस पाइपलाइन बिछाने की अपनी प्रतिबद्धता को भी दोहराया। हालाँकि इस दौरान भारत-पाक के बीच शांति वार्ताएं धीमी गति से चलती रहीं।

कश्मीर के साथ दोनों पक्ष परमाणु सीबीएम, सर क्रीक सीमा विवाद, वुलर बैराज, व सियाचिन आदि मसलों पर बातचीत चलाते रहे। परंतु इनका कोई स्थायी समाधान निकालने में सफल नहीं हो सके। हालाँकि दोनों देशो ने अपने संबंधो को गति देने के लिए श्रीनगर-मुजफ्फराबाद बस सेवा, वाघा से अटारी तक समझौता एक्सप्रेस और राजस्थान और सिंध के बीच थार एक्सप्रेस का संचालन शुरू किया ताकि दोनों देशों के लोग आपस में मिल सकें और आवाजाही शुरू हो सके।

इसी दौरान, एक नई शुरुआत की आशा के साथ भारत की दूसरी यात्रा पर पाकिस्तान के राष्ट्रपति मुशर्रफ 17 अप्रैल 2005 को दिल्ली आए ताकि बातचीत को आगे बढ़ाया जा सके। इस दौरान भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने उत्साह के साथ का कहा था कि "शांति प्रक्रिया को पीछे नहीं मोड़ा जा सकता है।" दोनों नेताओं ने संयुक्त वक्तव्य में कुछ नए उपाय जोड़े थे। उनमें नियंत्रण रेखा के पास संपर्कों का विस्तार, लाहौर-अमृतसर बस सेवा शुरू करने और कराची व मुंबई के बीच वाणिज्य दूतावास की स्थापना आदि शामिल थे। लेकिन 26/11 के मुंबई पर आतंकवादी हमले के कारण एक अत्यंत नकारात्मक तथा खतरनाक स्थिति पैदा हो गई। इस घटना की जिम्मेदारी पाकिस्तान में विद्यमान आतंकी संगठनों लश्कर-ए-तैयबा और जमायत-उल-दावा ने ली। इस घटना के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच चल रही समग्र बातचीत की प्रक्रिया को खत्म कर दिया गया। इस घटना की विश्व के लगभग सभी

देशों ने निंदा की जिसमें प्रमुख रूप से अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस तथा यूरोपीय संघ के देश शामिल थे।

इस प्रकार भारत के पाकिस्तान के साथ संबंध 2009 तक ऐसे ही बने रहे। 2009 के आम चुनाव के बाद भारत में यूपीए सरकार पुनः सत्ता में आई तथा भारतीय विदेश नीति के उद्देश्यों को आगे बढ़ने का कार्य किया जिसमें प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और तत्कालीन विदेश मंत्री एस. एम. कृष्णा का प्रमुख योगदान रहा। इन्होंने भी पाकिस्तान के साथ पुनः वार्ता शुरू करने का प्रयास किया। इसी कड़ी में मुशर्रफ और मनमोहन सिंह की एक मुलाकात गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन के दौरान हवाना (क्यूबा) में हुई जिसमें दोनों नेताओं ने मुंबई बम धमाकों की निंदा करने के साथ-साथ एक आतंक विरोधी संयुक्त संस्थात्मक तंत्र की स्थापना करने की भी घोषणा की। हालांकि दोनों देशों के बीच विध्यमान मतभेदों को सुलझाया नहीं जा सका। यूपीए-2 के शासनकाल के दौरान भारत-पाक संबंधों में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहे परन्तु दोनों देशों के संबंध सामान्य नहीं हो सके।

ii. **अमेरिका के साथ संबंध**: भारत ने यूपीए शासन के दौरान भी अमेरिका के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। इसमें प्रतिरक्षा और सामरिक सहयोग भी शामिल है। सितंबर 2004 में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अमेरिका की यात्रा के समय यह घोषणा की थी कि "अमेरिका के साथ संबंधों का विकास करना उनकी सरकार की एक प्राथमिकता है।" 29 जून 2005 में भारत और अमेरिका ने 10 वर्षीय प्रतिरक्षा भागीदारिता संरचना समझौता किया। जुलाई 2005 में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश जूनियर के साथ एक बैठक की। इस दौरान अमेरिका ने यह घोषित किया कि वह भारत को एक विकसित परमाणु प्रौद्योगिकी वाला जिम्मेदार राज्य मानता है।

मार्च 2006 में भारत-अमेरिका नागरिक परमाणु समझौता हस्ताक्षरित किया गया और अमेरिका ने भारत को एक परमाणु शक्ति संपन्न देश स्वीकार किया। आगे चलकर अक्टूबर 2008 में यह समझौता एक द्विपक्षीय संधि का रूप ले सका जिसने भारतीय परमाणु शस्त्रों और परमाणु नीति को व्यावहारिक रूप में अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्रदान कर दी। इससे भारत विश्व परमाणु क्लब का सदस्य भी बन गया। भारत ने ऐसे ही परमाणु समझौते फ्रांस, ब्रिटेन, जापान और रूस के साथ भी किये। इस प्रकार यूपीए शासनकाल के दौरान भारत-अमेरिका संबंध काफी तेजी और मजबूती के साथ आगे बढ़े।

iii. **चीन के साथ संबंध:** यूपीए के शासनकाल के दौरान भारत-चीन संबंधों में भी मजबूती आई और दोनों देशों ने उच्च स्तरीय यात्रा की परंपरा को बनाए रखा। इसके साथ ही, दोनों देशों ने सीमा विवाद का हल तलाशने को भी नई गति दी। फरवरी 2005 में बीजिंग में भारत के विदेश सचिव एम. के. नारायणन और चीन के उप विदेश मंत्री वु दावेई की मुलाकात हुई और चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की भारत यात्रा का मार्ग प्रशस्त हुआ। अप्रैल 2005 में जियाबाओ और नवंबर 2006 में चीन के राष्ट्रपति हू जिंताओ ने भारत की यात्रा की जिससे दोनों देशों के संबंध मजबूत हुए। इन मुलाकातों के दौरान दोनों देशों ने सामरिक तथा सहयोगी भागीदारी स्थापित करने की सहमति व्यक्त करने के साथ-साथ आर्थिक संबंधों, व्यापार, सेवाओं, निवेश तथा अन्य क्षेत्रों का विस्तार करने पर भी जोर दिया गया।

चीन के उप विदेश मंत्री वु दावेई और भारतीय सुरक्षा सलाहकार एम. के. नारायणन ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसमें सीमा विवाद को हल करने पर जोर दिया गया। इन उच्च स्तरीय राजनीतिक आदान-प्रदानों में एक अन्य महत्वपूर्ण यात्रा तत्कालीन भारतीय प्रतिरक्षा मंत्री प्रणब मुखर्जी ने मई, 2006 में की। अपनी बीजिंग यात्रा के दौरान मुखर्जी ने दोनों देशों ने सैनिक सहयोग में तेजी से विकास करने पर

ध्यान दिया। 2006 में दोनों पक्ष सिक्किम में नाथू ला दर्रे पर व्यापार मार्ग खोलने पर भी सहमत हुए। व्यापार इन द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने वाला इंजन बन रहा था और अगले कुछ वर्षों में चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार बनकर उभरा। यह स्थिति यूपीए शासनकाल के दौरान कायम रही। इस प्रकार यूपीए शासनकाल के दौरान भारत-चीन संबंधों में उल्लेखनीय प्रगति हुई।

iv. **भारत-रूस संबंध:** यूपीए शासन के दौरान भारत-रूस संबंधों में मजबूती आई जिसमें प्रतिरक्षा और आर्थिक सहयोग शामिल है। 3 दिसंबर, 2004 को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और डॉ. मनमोहन सिंह के बीच व्यापक बातचीत हुई जिसमें दोनों देश ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग और सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता को रूस के समर्थन की घोषणा ने नई ऊर्जा प्रदान की। इसी क्रम में 2005 में भारतीय प्रतिरक्षा मंत्री प्रणब मुखर्जी ने मास्को की यात्रा की जिसमें दोनों देशों के बीच प्रतिरक्षा संबंधों को मजबूती देने का संकल्प लिया गया।

भारत ने रूस के सुदूर-पूर्व में स्थित सखालिन क्षेत्र में भारी निवेश किया जिसमें अक्टूबर 2005 से तेल और गैस का उत्पादन शुरू हो गया। इससे दोनों देशों के बीच ऊर्जा सुरक्षा के संबंध मजबूत हुए। भारत का तारापुर आणविक संयंत्र रूस द्वारा आपूर्तित कम समृद्ध यूरेनियम से ही चल रहा है। इसके साथ ही, रूस ने तमिलनाडु के कुडनकुलम परमाणु बिजलीघर के लिए 1000 मेगावाट के दो रिएक्टर भी भारत को दिए। इस प्रकार यूपीए शासनकाल के दौरान भारत-रूस संबंध अधिक मजबूती के साथ उभर कर सामने आए।

भारत, चीन और रूस के नेताओं के बीच 2008 में सेंट पीटर्सबर्ग में जी-20 शिखर सम्मलेन के दौरान एक महत्वपूर्ण बैठक हुई जिसमें महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों जैसे कि अंतर्राष्ट्रीय परिवर्तन की आवश्यकता, वित्तीय संरचना और अमेरिका और अन्य बहुपक्षीय वित्तीय संस्थानों में परिवर्तन लाने पर जोर दिया गया ताकि 21 वीं सदी के

परिवर्तित शक्ति समीकरणों को प्रतिबिंबित किया जा सके। इस रणनीतिक पहल ने कुछ समय बाद ब्रिक समूह के गठन का मार्ग प्रशस्त किया जिसमें ब्राजील, रूस, भारत और चीन शामिल थे। बाद में दक्षिण अफ्रीका ने इसे ब्रिक्स बना दिया।

इस प्रकार यूपीए शासन के दस वर्षों के दौरान भारतीय विदेश नीति में सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिसने इसे शीत युद्ध की छाया से बाहर कर दिया। यूपीए शासन की पहल के परिणामस्वरूप, देश के भू-रणनीतिक हितों की सेवा करने के अपने प्राथमिक फोकस को खोए बिना, विदेश नीति आर्थिक सहयोग का एक प्रमुख साधन बन गई।

V. निष्कर्ष:

यूपीए शासनकाल के दौरान भारतीय विदेश नीति ने अपने राष्ट्रीय हितों के अनुकूल सफलतापूर्वक कार्य किया जिसमें प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का प्रमुख योगदान रहा। इसके साथ ही, भारतीय विदेश मंत्री नटवर सिंह और एस. एम. कृष्णा का भी भारतीय विदेश नीति और विश्व के प्रमुख देशों के साथ संबंधों को मजबूती प्रदान करने में उल्लेखनीय योगदान रहा। तत्कालीन रक्षा मंत्री प्रणब मुखर्जी ने भी भारतीय सामरिक संबंधों को विभिन्न देशों के साथ मजबूती प्रदान करने का कार्य किया। अतः यूपीए शासनकाल के दौरान भारत के अमेरिका, यूरोपीय संघ, आसियान, पूर्वी-एशियाई देशों तथा केंद्रीय एशियाई देशों, फ्रांस, रूस, चीन आदि देशों के साथ संबंधों को तेजी से विकसित करने के प्रयास किया। हालांकि भारत के पाकिस्तान के साथ संबंधों में अनेक उतार-चढ़ाव देखे गए।

आज भारत विश्व स्तरीय शक्ति का स्तर प्राप्त कर चुका है तथा विश्व के सभी देश भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति की प्रशंसा करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत को कुछ ही वर्षों में एक महाशक्ति का दर्जा प्राप्त हो जाएगा और यह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता प्राप्त कर लेगा। इस संदर्भ में

भारतीय कूटनीति सक्रियता से कार्य कर रही है। निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि यूपीए शासनकाल के दौरान भारतीय विदेश नीति ने अपने वैदेशिक संबंधों को उच्च स्तर पर पहुंचाने के साथ-साथ विभिन्न देशों के साथ मजबूत संबंध स्थापित करने का प्रयास किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. राजेश मिश्रा. (2022). भारतीय विदेश नीति: भूमंडलीकरण के दौर में. दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान प्रा. लि.
2. राजीव सीकरी. (2017). भारत की विदेश नीति: चुनौती और रणनीति. दिल्ली: सेज भाषा.
3. वी. एन. खन्ना. (2016). भारत की विदेश नीति. दिल्ली: विकास पब्लिशिंग.
4. सुमित गांगुली. (2015). दुनिया से जुड़ाव: 1947 से भारत की विदेश नीति. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. सुमित गांगुली. (2015). भारतीय विदेश नीति. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. अंकित पांडा. (2014). भारत की यूपीए सरकार और विदेश नीति. द डिप्लोमैट पत्रिका.
7. कांति पी. बाजपेयी और हर्ष वी. पंत. (2013, संपादित). भारत की विदेश नीति: एक अध्ययन. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
8. आर. एस. यादव. (2013). भारत की विदेश नीति. दिल्ली: पीयरसन.
9. बिमल प्रसाद. (2012). द मैकिंग ऑफ़ इंडियाज फॉरेन पॉलिसी. दिल्ली: विस्टा पब्लिशिंग.
10. जे. एन. दीक्षित. (2012). भारतीय विदेश नीति. दिल्ली: प्रभात पेपरबैक्स.

11. यू. आर. घई. (2011). भारतीय विदेश नीति. जालंधर: न्यू एकेडमिक पब्लिशिंग कंपनी.

12. वी. पी. दत्त. (2010). स्वतंत्र भारत की विदेश नीति. दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट.

13. बी. एम. जैन. (2008). ग्लोबल पॉवर: इंडियाज फॉरेन पॉलिसी 1947-2006. नागपुर: लेक्सिंगटन बुक्स.

14. हर्ष वी. पंत. (2006). भारतीय विदेश नीति और चीन. स्ट्रैटेजिक अफेयर्स, अक्टूबर, इश्यू-04.